

11. "कहते हैं चेतन से अचेतन - - - - - हो सकती।"

(क) वक्ता कौन हैं परिचय दीजिए।

(ख) चेतन तथा अचेतन शक्ति का वर्णन किसके माध्यम से तथा क्यों किया गया है?

(ग) यहाँ संस्कारों की दासता से कौन मुक्त होना चाहता है और क्यों?

(घ) मैं के मन में उठने वाले भावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर 1) प्रस्तुत कथन की वक्ता अविनाश तथा अतुल की माँ हैं, जो संस्कारों में जकड़ी एक सीधी-सादी महिला हैं। वह संक्राति काल की एक हिंदु नारी हैं जो अपनी परंपराओं और संस्कारों में बँधी हुई हैं। माँ एक संवेदनशील समतमयी स्त्री हैं जो अपने पुत्र को कष्ट में देखकर संस्कारों की बँडियों से मुक्त होकर विजातीय बंध को स्वीकार करने का निर्णय लेती हैं। इस प्रकार एकांकी के अंत में वह एक क्षमाशील, कर्तव्यशील, कर्तव्यनिष्ठ माँ के रूप में हमारे सामने उपास्थित होती हैं। इस प्रकार माँ के चरित्र से हमें यह ज्ञात भी होता है कि सुखी परिवार की जीव बुजुर्गों के हृदय परिवर्तन पर आधारित है।

उत्तर 2) चेतन शक्ति से यह अभिप्राय है कि वह शक्ति या सोच जो प्रत्यक्ष रूप से या सजीव रूप में हमारे सामने होती है व अचेतन शक्ति का अर्थ ऐसी सोच तथा ऐसे विचारों से है जो अप्रत्यक्ष रूप में हमारे दिल या मन में चलते रहते हैं यह हमें प्रत्यक्ष रूप से किए जा रहे कार्य में बाधा डालते हैं।

यहाँ इसका वर्णन अतुल व अविनाश की माँ के माध्यम से किया गया है जो संस्कारों में बँधी महिला हैं जिसके कारण वह कोई भी निर्णय स्वतंत्र रूप से नहीं ले पाती।



उत्तर-३. प्रस्तुत एकांकी में कहानी के आरंभ से यह दर्शाया गया है कि संस्कारों की दासता से माँ मुक्त होना चाहती है क्योंकि जब उनका बड़ा बेटा अविनाश बहुत बीमार होता है तब वह संस्कारों के बंधन में बंधी होने के कारण उन्हें खबर तक नहीं मिलती और बाद में अपनी बड़ी बहू अविनाश की पत्नी की यह खबर सुनकर की कि वह भयानक अवस्था में है और उसका कुछ हो जाने पर अविनाश भी नहीं रहेगा उनका मन विचलित हो उठता है और वह वह संस्कारों की दासता से मुक्त होकर अपने बेटे अविनाश व उसकी बहू को अपनाने का निर्णय लेती है।

उत्तर-४. माँ यह सोचती है दोनों भाई निर्मम होते हुए भी कितने धनिक हैं उनका आपसी प्रेम बरकरार है। उमा भी निर्मम है परंतु वह अविनाश के घर जाती है और वह अविनाश की पत्नी के व्यवहार व स्व-रंग से प्रभावित भी है। तब माँ को लगता है कि वह ममता से भरी होने का दावा तो करती है पर उसका सदेशन करने की बारी आने पर पीछे हट चुकती है तभी वह पश्चाताप करते हुए कहती है कि काशा वह भी निर्मम होती तो संस्कारों में न बंधती और अपने बेटे से दूर न होती।